1. महाकाव्य

महाकाव्य दो शब्दों से मिलकर बना है, महान् और काव्य जिसका अर्थ है महान् कविता। अर्थात् ऐसे काव्यों के अर्थ; कथावस्तु, नायकत्व, देशकाल एवं पर्यावरण और भाषा शैली महान् हो, उसे महान् कहते हैं। यह मुख्य रूप से कथात्मक शैली में लिखी गई एक बहुत लम्बी काव्य रचना है इसमें लम्बी कथाओं को, उसके सभी खण्डों को समाहित करते हुए उसके अन्य पात्रों एवं साथियों को इसमें वर्णित किया जाता है। लोकादर्श एवं उदात्तशैली की रचना जैसे हरिऔध जी का 'प्रियप्रवास' काव्यग्रन्थ।

महाकाव्य में किसी ऐतिहासिक या पौराणिक महापुरुष की सम्पूर्ण जीवन कथा का आधोपंत वर्णन होता है। जैसे-पद्मावत, रामचरितमानस, कामायनी, साकेत आदि महाकाव्य हैं।

आधुनिक युग में महाकाव्य के प्राचीन प्रतिमानों में परिवर्तन हुआ है। अब इतिहास के स्थान पर मानव जीवन की कोई भी घटना, कोई भी समस्या, उसका विषय हो सकता है। महान् पुरुष के स्थान पर समाज का कोई भी व्यक्ति नायक हो सकता है, लेकिन उस पात्र में विशेष निर्माता का होना अनिवार्य है।

अग्निपुराण के अनुसार—'सर्गबन्धोमहाकाव्यम्' अर्थात् जिस काव्य में सर्गों का बंधन हो, उसे महाकाव्य कहा जाता है।

प्रथम आचार्य भामह ने 'कथालंकार' में महाकाव्य की परिभाषा देते हुए लिखा है, "महाकाव्य सर्गबद्ध होता है, वह महानता का द्योतक होता है, उसमें अलंकार और सदगुण का समावेश होता है।" इसमें विचार-विमर्श, दूत, प्रयाण, युद्ध, नायक का अभ्युदय, इसमें पाँच संधियाँ शामिल हैं। बहुत अच्छा न हो, उत्कर्षयुक्त हो। लोग स्वभाव का वर्णन और सभी रसों का पृथक्करण चित्रण हो। नायक के कुल, बल, शास्त्रज्ञान आदि का उत्कर्षक जानकर और किसी के उत्कर्ष के लिए नायक का वध नहीं करना चाहिए।

रुद्रट के अनुसार, "महाकाव्य का नायक द्विजकुल सम्पन्न, सर्वगुण सम्पन्न, महान्, उदात्त, शक्ति सम्पन्न, नीतिज्ञ तथा कुशल राजा होना चाहिए।" उनके अनुसार यदि महाकाव्य की कथावस्तु उत्पाद है तो इसकी स्थापना में नायक राजवशं की प्रशंसा, अलौकिक और अति प्राकृत तत्वों का समावेश होना चाहिए।

हेमचन्द्र के अनुसार—"महाकाव्य संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश की गुड़िया, ग्रामीण भाषा में निबद्ध, विभिन्न सर्गों के अन्त में विभिन्न प्रतों के प्रयोग, स्कन्द संस्कार, संस्तुति तथा शब्दार्थ वैचित्र्य से पूर्ण होता है।"

महाकाव्य के लक्षण—(1) महाकाव्य का आधार ऐतिहासिक या इतिहासाश्रित होना चाहिए।

(2) उनका कलेवर जीवन के विविध वर्णनों से सम्बद्ध होना चाहिए। इस वर्णन में प्राकृतिक, सामाजिक और वैज्ञानिक भौगोलिक क्षेत्रों से इस प्रकार के सम्बन्ध होने चाहिए कि उनमें से प्रत्येक माध्यम से मानव जीवन का सम्पूर्ण वैभव, वैचित्र्य एवं विस्तार के साथ पूर्णचित्र उपस्थित हो सके। इसलिए उनके आयामों (अष्टाधिक सर्गों में) का विस्तृत विवरण होना चाहिए।

(3) महाकाव्य का नायक देवता सदृश क्षत्रिय हो, जिसका चरित्र धीरोदात्त गुण से समन्वित हो अर्थात् वह महासत्व, अत्यन्त गम्भीर, क्षमावान, स्थिर चरित्र, निगूढ़, व्यवहार और दृढ़व्रत होना चाहिए। पात्र भी एक ही प्रकार के विशिष्ट व्यक्ति, राजपुत्र, मुनि आदि होने चाहिए। जिस प्रकार रामायण के नायक श्रीराम हैं और महाभारत के नायक राधेय कर्ण हैं।

Scanned with CamScanner

(4) महाकाव्य में शृंगार, वीर, शान्त एवं करुणा में से एक रस की स्थिति अंग रूप में तथा अन्य रसों की अंग रूप में होती है।

(5) महाकाव्य सद्वृत्त होता है अर्थात् उसकी प्रवृत्ति शिव एवं सत्य की ओर होती है और उसका उद्देश्य चतुर्वर्ग फल की प्राप्ति होती है। असत्य पर सत्य की विजय, अधर्म पर धर्म की विजय, राष्ट्रभक्ति, नैतिक आदर्श और मानवतावादी मूल्यों की स्थापना को भी महाकाव्य का उद्देश्य माना जाता है।

(6) महाकाव्य की शैली गरिमामय और उदात्त होती है। संगीतात्मकता एवं गेयता से महाकाव्य की गरिमा में वृद्धि होती है। महाकाव्य की भाषा सहज, सरल, भावानुकूल और प्रशादोत्पादक होती है। शैली अलंकृत होते हुए भी सहज होनी चाहिए।

महाकाव्य के मूल तत्व–

(1) कथावस्तु, (2) पात्र, (3) प्रयोजन और प्रभाव, (4) पदावली भाषा।

कथावस्तु–महाकाव्यों की कथावस्तु एक ओर शुद्ध ऐतिहासिक यथार्थ से भिन्न होती है और दूसरी ओर सर्वथा काल्पनिक भी नहीं होती। उसमें सशक्त जातीय दन्तकथाओं पर सम्मान जनक और यथार्थ से भव्यतर जीवन का अंकन होना चाहिए।

महाकाव्यों का आयाम विस्तृत होना चाहिए जिसके अन्तर्गत विविध उपाख्यानों का समावेश हो सके।

महाकाव्यों में अनेक घटनाओं का सहज समावेश हो सकता है जिससे एक ओर काव्य को सघन और गरिमा प्राप्त होती है और दूसरी ओर अनेक उपाख्यानों के समागम के कारण रोचक वैविध्य उत्पन्न होता है।

2. **पात्र**–महाकाव्य के पात्रों के सम्बन्ध में अरस्तु ने केवल इतना कहा है कि महाकाव्य और त्रासदी में समानता है कि उसमें भी उच्चतर कोटि के पात्रों को पद्य बद्ध अनुकृति रहती है। त्रासदी के पात्रों से समानता के आधार पर निष्कर्ष निकालना कठिन नहीं कि महाकाव्य के पात्र भी प्रायः त्रासदी के समान भद्, वैभवशाली, कुलीन और मशस्वी होने चाहिए। रुद्रट के अनुसार महाकाव्य में प्रतिनायक और उसके कुल का भी वर्णन होता है।

3. **प्रयोजन और प्रभाव**–अरस्तु के अनुसार महाकाव्य का प्रभाव और प्रयोजन भी त्रासदी के समान होना चाहिए। यह प्रभाव नैतिक और रागात्मक अथवा दोनों प्रकार का हो सकता है।

4. **पदावली भाषा**–गरिमा तथा प्रसादगुण महाकाव्य की शैली के मुख्य तत्व हैं। गरिमा का आधार है असाधारणता। महाकाव्य की भाषाशैली त्रासदी की करुणमधुर अलंकृत शैली से भिन्न-कलात्मक, उदात्त और गरिमा होनी चाहिए।

वास्तव में महाकाव्य व्यक्ति की चेतना से अनुप्राणित न होकर समस्त युग एवं राष्ट्र की चेतना से अनुप्राणित होता है। इसी कारण उसके मूल तत्व देशकाल सापेक्ष न होकर सर्वाभौम होते हैं जिनके अभाव में किसी भी देश अथवा युग की कोई रचना महाकाव्य नहीं बन सकता और जिनके सद्भाव में, परम्परागत शास्त्रीय लक्षणों की बाधा होने पर भी किसी कृति के महाकाव्य के गौरव से वंचित करना सम्भव नहीं होता। ये मूलतत्व हैं–

(1) उदात्त कथानक, (2) उदात्त कार्य या उद्देश्य, (3) उदात्त चरित्र, (4) उदात्त भाव, (5) उदात्त शैली।

महाकाव्य की विशेषताएँ–

Scanned with CamScanner